# अखिल भारतीय काव्यधारा

## रामपुर, उत्तर प्रदेश

## मासिक ई पत्रिका

वर्ष :3 अंक :3 माह: मार्च 2020

# होली विशेषांक

जितेन्द्र कमल आनंद
प्रधान संपादक

पुष्पा जोशी प्राकाम्य
संयुक्त संपादक

# संपादक मंडल

**प्रधान संपादक**
जितेन्द्र कमल आनंद

**संयुक्त संपादक**
पुष्पा जोशी प्राकाम्य

**संपादक**

राम किशोर वर्मा

डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता

रागिनी गर्ग

**समीक्षक**

डॉ महेश मधुकर

छाया सक्सेना 'प्रभु'

राजीव प्रखर

**चित्रांकन**
शोभित

**प्रकाशक**
**आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा**
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | | प्रष्ट |
|---|---|---|
| | सम्पादकीय | 5 |
| 1 | ओंकार सिंह विवेक | 6 |
| 2 | मीनाक्षी ठाकुर | 6 |
| 3 | डॉ. बी. के. चन्द्रसखी | 7 |
| 4 | राकेश कुमार मिश्रा | 7 |
| 5 | राजेशवरी जोशी आर्द्रा | 8 |
| 6 | कृष्ण लता “कृष्णा” | 9 |
| 7 | रवि प्रकाश | 10 |
| 8 | राम किशोर वर्मा | 11 |
| 9 | जितेन्द्र कमल आनंद | 12 |
| 10 | सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी | 13 |
| 11 | डॉ रीता सिंह | 14 |
| 12 | डॉ मीना कौशल | 15 |
| 13 | प्रीति शर्मा | 16 |
| 14 | कमल सक्सेना | 17 |
| 15 | पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य' | 18 |
| 16 | रामरतन यादव | 19-20 |
| 17 | तरुण सिंह मौर्य (आदि) | 21 |
| 18 | रेखा शर्मा | 22 |

| | | |
|---|---|---|
| 19 | मनोज 'मनु' | 23 |
| 20 | मीना नक़वी | 24 |
| 21 | डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता | 25 |
| 22 | भुवन बिष्ट | 26 |
| 23 | विनय साग़र जायसवाल | 27-28 |
| 24 | डॉ सीमा अग्रवाल | 29 |
| 25 | छाया सक्सेना 'प्रभु' | 30 |
| 26 | नयना कक्कड़ कपूर | 31-32 |
| 27 | शोभित | 33 |
| 28 | राघव सागर | 34 |
| 29 | राजीव 'प्रखर' | 35 |
| 30 | अखिलेश वर्मा | 36 |
| 31 | डॉ महेश मधुकर | 37 |
| 32 | रागिनी गर्ग | 38-39 |
| 33 | मोनिका "मासूम" | 40 |
| | अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र | 41 |

# सम्पादकीय

साहित्य आध्यात्मिक, साहित्यिक , सम-सामयिक और राष्ट्र-हित में सृजन होना चाहिए। काव्य की अनेक विधा युक्त राष्ट् बोध की अवधारणा , दिशा-दशा-बोध से ओतप्रोत होना चाहिए।

आज की समस्या है देश भक्ति का अभाव, स्वार्थपरक दूषित राजनीति, देशवासियों की दिशाहीनता आदि। हमें ऐसा साहित्य सृजन करना होगा जिससे कि देश को झकझोर कर जगाया सके। इस दिशा में साहित्यकारों को सही दिशा में अग्रसर करने के लिए हम आह्वान करते है, उस मानसिकता के साथ जिस समय वीर सावरकर ने कहा था कभी--"*इफ यो आर विध अस, विध यू , इफ यू आर नाट विद अस, विधआऊट यू एण्ड इफ यू आर अगेनस्ट अस इनस्पिट आफ यू।*" लेकिन साहित्य की दृष्टि में भी कुछ बातें ध्यान देने योग्य है। रचनाओं में साहित्यिक मूल्य बना रहना चाहिए, हम अपने मूल्यों का अवमूल्यन न होने दें, हमें अपने आदर्श, अपनी देश भक्ति, अपनी सांस्कृतिक परम्परायें, संस्कृति की रक्षा करनी ही होगी; तभी हरेक का विकास होकर देश सम्मुन्नत हो सकेगा, समृद्ध हो सकेगा।

इस दिशा में रचनाकार सक्रिय हो रहे हैं।

होली की हार्दिक बधाई के साथ अखिल भारतीय काव्यधारा मासिक ई पत्रिका का यह मार्च-2020 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

जय हिंद! जय हिंदी!!

दिनांक :13-मार्च-2020

**जितेन्द्र कमल आनंद**
प्रधान संपादक
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

## कुछ दोहे होली पर

रस्म निभाने को गले,मिलते थे जो यार।
वे मन से होली मिले, ग़ज़ब हुआ इस बार।।
होली का त्यौहार है,कुछ तो हो हुड़दंग।
हमसे यह कहने लगे,नीले पीले रंग।।
महँगाई ने जेब को,जब से किया उदास।
गुजिया की तब से बहुत,कम हो गई मिठास।।

**ओंकार सिंह विवेक**
रामपुर-उ0प्र0

## होली

जमके रंग गुलाल उड़ेंगे ,अब के बरस की होली में,
गोरी तुझसे गले मिलेंगे ,अब के बरस की होली में।
सोच समझ के आइये रे छोरे,बरसाने की गलियों को,
दीख गया तो लट्ठ पड़ेंगे ,अब के बरस की होली में ।
मैं हूँ माखन चोर कन्हैया, भेद न मेरा पावेगी
गोरी तेरे गाल रंगेंगे ,अब के बरस की होली में।
जा रे ओ कारे साँवरिया, मैं हूँ गोरी गूजरिया
हम न तेरे रंग में रंगेंगे, अब के बरस की होली में।
छोड़ दे गोरी झगड़ा करना,होली का त्योहार बड़ा,
लाल गुलाबी मुखड़े खिलेंगे अब के.बरस की होली में।
तू जीता मैं हारी रे छोरे,रंग दे अपने रंग में तू
जमुना जी में मुखड़े धुलेंगे अब के बरस की होली में।

**मीनाक्षी ठाकुर**
मिलन विहार, मुरादाबाद

फागुन में सावन बरसा है, अब कुछ भी नहीं सुहाता है!
पहले हाथों में डण्डा था, अब हाथों में केवल छाता है!
सब पुष्प झर गये रिमझिम से, पानी ने बण्टाढार किया!
कोरोना जैसे हौवा ने सबका ही डर से मन घार किया!
यह मलय समीर सी चलती है, फगुनाई के इस आँगन में,
आमों के बौर भी झरे अहो, कोयल भी बैठी बागन में!
मैं देखूं किसको मित्र मेरे, यह परिवर्तन क्यों आया है?
इस फगुनाई के आँगन में, यह सावन ही क्यों आया है?
मानव ने सारे छीने हैं, प्रकृति के सब उपहार दिये!
प्रकृति भी अब सालेगी, मानव ने जो भी करम किये!

**डॉ. बी. के. चन्द्रसखी**
वैशाली गाजियाबाद

**ताने बाने**

कुछ उधर गये कुछ इधर गये
ताने बाने सब बिखर गये ,
मंजर वो दिखाये नफरत ने
भाई से भाई बिछड़ गये ,
मौसम ने ली अंगड़ाई जब
गुलशन के पत्ते निखर गये ,
जिस राह से जाने थे लीडर
उस राह के चहरे संवर गये ,
जब गजल सुनाई 'राकेश' ने
कितनों के चेहरे उतर गये ,

**राकेश कुमार मिश्रा**

## रिश्ते

शब्दों के तरकश लहूलुहान आत्मा
नहीं झेल पाती अपनों के जख्म,
रिश्तो की खत्महोती मर्यादा की
हदें ,
देहरी से होती निष्कासित,
टूटते अपनत्व के बंधन
गरिमाओ से बंधे स्नेह के धागों का
अंत किर्च किर्च हो कर बिखरते
आँगन चौबारों में सहेज कर रखा था
जिनको वर्षो तक हृदय रक्त से सिंचित
बगिया का उजड़ना किसी दंश से कम
नहीं है अहं और तिरस्कार के बोझ
से दबे रिश्तो का भविष्य सूखे पतों
की मानिंद झर जाना ही लिखा
होता है।

**राजेशवरी जोशी आर्द्रा**

## निशा

ए निशा!
तू वाकई! कमाल है
माना ये सब,
दिनकर के न आने तक का जाल है!
जो दिखता नहीं!
वो काल है!
पर तू कमाल है!
तेरे आँचल में सोकर
मैं रोना भूल जाती हूँ!
निराश हूँ,हताश हूँ
लेकिन यह भी बोना भूल जाती हूँ!
तेरे आँचल की छांव में
परम सुख और आनंद है!
प्रेमी कवि तो बस!
घनानंद है!
इस दुनियां में फैले
सम्मान और अपमान की बातें
तेरी गोद में सिर रखने के बाद
भूल जाती हूँ!
इसीलिए तेरी और
मैं खींची चली आती हूँ!
दुनियां के तानों की परवाह

और रक्त संबंधों की आह!
न मुझे जीने देती है
और न ही मरने देती है!
एक तेरे आँचल का सहारा न होता
तो हर इंसान असमय काल का ग्रास बनता!
इस दुनियां के झमेलों में
तू खूबसूरत सा मेला है!
तेरा आँचल सपनों से भरा,
और अपनो से हरा है!
तेरी दुनियां में जो कुछ है,
सब खरा है!
बाकी तेरे आँचल से परे,
सब ज़रा है!
तेरे आँचल मे सिमटने का सुख
गरीब और अमीर
दोनों के लिए
समान सुखदाई होता है!
तभी तो हर आदमी,
सारे झमेलों को
तेरा आँचल मिलते ही खोता है!
और सुकून से सोता है!!

**कृष्ण लता "कृष्णा"**
भीलवाड़ा (राजस्थान), 7665055166

## फागुन का त्यौहार (गीतिका)

मस्ती के मौसम में आता, फागुन का त्यौहार
मिलना सबसे गले सिखाता, फागुन का त्यौहार
नीले पीले हरे बैंजनी देखो फूल खिले हैं
इन्हें गगन में है बिखराता, फागुन का त्यौहार
वायु गीत को गाती है, जब पक्षी राग सुनाते
दिल में खुशियों को है लाता, फागुन का त्यौहार
भरी रंग से है यह दुनिया , आओ दो क्षण गा लें
मुस्कानों से भर-भर जाता, फागुन का त्यौहार
बिना मोल खुशियाँ मिलती हैं ,थोड़ा अंदर ढूँढो
सबको यह ही राज बताता , फागुन का त्यौहार
यूँ तो बारह माह वर्ष में, ऋतुएँ छह-छह होतीं
सबसे अलग मगर कहलाता, फागुन का त्यौहार

**रवि प्रकाश**
बाजार सर्राफा, रामपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल 99 97615451

## बादल का गुस्सा

गुस्सा जब बादल को आया, उसने रौद्र रूप दिखलाया ।
गरज-गरज कर, चमक-दमक कर, सबको उसने खूब डराया ।।
गुस्सा खूब हुआ जब उसको, टंसुआ उसने खूब बहाया ।
बंद किया यों आना-जाना, सबको घर में कैद कराया ।।
पेड़ काटकर, नदी पाटकर, धरती का श्रृंगार मिटाया ।
पर्वत काटे, पृथ्वी खोदी, भू को कितना घाव दिलाया ।।
मन मर्जी जो करता मानव, जंगल को भी साफ कराया ।
यही देख-देख कर शायद, आसमान भी यों थर्राया ।।
धरती नीचे रेल चलाना, सड़क बिछाना बंद करो ।
शहर बसाना, मॉल बनाना, इस पर गहन विचार करो ।।
अन्न उगेगा किस धरती पर, इस पर भी मंथन कर लो ।
पृथ्वी का श्रृंगार करो तो, बादल को वश में कर लो ।।

**राम किशोर वर्मा**
जयपुर (राजस्थान)

## छप्पय छंद

कृष्ण 'कमल' के प्राण,
प्राण हमको हैं प्यारे!
अद्भुत प्रभु घनश्याम,
और अनुपम हैं न्यारे!
क्या गायें, क्या विप्र,
सभी के मीत हमारे !
बसुधा के भी बंधु ,
हुए हैं आप सहारे!
सकल गुणों के धाम जो--
सुभग और अभिराम हैं,
परमेश्वर प्रभु कृष्ण वह,
गतिमय विभु अविराम हैं।।

**जितेन्द्र कमल आनंद**

हम न होते, तुम न होते
प्यार का क्या नाम होता
वेदना से रंजना का
जन्म भी होता नहीं
कवि न होता न ही कविता
यज्ञ भी होता नहीं

**जितेन्द्र कमल आनंद**

ज़िन्दगी ज़िन्दगी है, मत उसको अपमान समझ
ज़िन्दगी देन है परमेश्वर की, वरदान समझ
ज़िन्दगी दुःख-सुख का संतुलन है, समर्पण भी
ज़िन्दगी लय है, कला जीवन की, सम्मान समझ

**जितेन्द्र कमल आनंद**
रामपुर, उत्तर प्रदेश

राकेश - रश्मियों ने भोर को सजा दिया
दिनकर ने आकर स्वर्णिम रंग लूटा दिया
चहुँ ओर खग- कलरव संगीत बन गूँजरहा
मधुरिम प्रकृतिं ने सुखद फाग गा दिया।।

चम्पा, चमेली ,सरसो ,टेसू ने रंग भर दिया
बाल ,युवा वृद्ध वृन्द सबका विभोर जिया
अमुआ का बोर आ नव नव राग लेकर
कोयल - संगीत ने मन्त्र मुग्ध कर दिया।।

चहुँ ओर शीत बयार ,मची हुई हाहाकार
कैसे कोई काम करे जिंदगी बनी जैसे भार
हिम शिखरों पर रजत स्वर्ण की छाई छटा
मलयानिल लहराती मंद मंद चले बयार।।

**सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी**
गदरपुर उत्तराखंड

फाग मस्त हो लगा बरसने
बसंत छायी बदरी सावन
सदी इक्कीसवीं को मानों
चढ़ रहा बीस का है यौवन।

भीग गयी है पीत चुनरिया
हुई सर्द है पवन लहरिया
ठिठुर रही है सुमन महक भी
काँप रहा कोकिल का गायन।
बसंत छायी बदरी सावन।।

भूले फर फर भी पल्लव हैं
शांत हुए ज्यों सब तरुवर हैं
धानी चादर ने खेतों की
ओढ़ा शीत लहर का दामन।
बसंत छायी बदरी सावन।

**डॉ रीता सिंह**
चन्दौसी (सम्भल)

नहीं पटाखे छोड़े हमने
फिर धुआँ कहाँ से आया
केवल दीप जलाये, तो क्यों
धुंध भरा दिन है पाया।
कर्म बड़ों के हम सब बच्चे
जब तब भरते आयें हैं
गलती नहीं हमारी फिर भी
सजा भुगतते आये हैं।
स्कूटी कार मोटर साईकिल
दिन दिन बढती जाती हैं
बोलो कौन चलाया इनको
दूषित हवा बनाती हैं।
कूड़ा कौन जलाता जिससे
गाँव शहर विष फैला है
कहाँ गया वह सुसभ्य मानव
करके मौसम मैला है।

**डॉ रीता सिंह**
चन्दौसी (सम्भल)

होली में शुभ यज्ञ हो,कीटक मरणासन्न।
स्वच्छ बने वातावरण,खुशियाँ हो आसन्न।।

धरा धान्य धन पूर्ण हो, हरषें जन प्रतिपाल।
रोग दोष होवे ज्वलित,हलधर सभी प्रसन्न।।

यज्ञधूम हो व्योम में,रहे प्रदूषण शान्त।
विकट व्याधियाँ ध्वस्त हों,तर्पण नूतन अन्न।।

हो पुष्पों की होलियाँ,प्रसरित दिव्य सुगन्ध।
पुलकित मुकुलित तन सु मन,हर्ष हृदय आपन्न।।

प्रणव व्याप्त ब्रह्माण्ड में,व्याहृतियाँ हों दीप्त।
श्रीहरि की ऐसी कृपा,हो सब जन सम्पन्न।।

## डॉ मीना कौशल

**ऋतु बसंत है आई** (गीत)

दिशा-दिशा में फूली सरसों,टेसू महक रहे,
आम्र मंजरी बौराई,पक्षी गण चहक रहे।

भौंरा कली संग इठलाए, कोयल कूक रही,
पिया बिना विरहिन के मन में, उठती हूक रही।
आये हैं ऋतु राज संग में, लेकर सौगातें
लगी धूप रवि से कहने, कल तक जो मूक रही।
सुप्त हुए अरमान जगे, अन्तस् में दहक रहे,
आम्र मंजरी बौराई, पक्षी गण चहक रहे।

सुरभित सुमन सुवासित देखे, और सखी मुस्काई,
अंग-अंग हो गया प्रफुल्लित, मदहोशी-सी छाई।
छेड़ रही हैं सारी सखियाँ, देखो मुझको माई,
प्रीतम का सन्देशा लेकर, ऋतु वसंत यह आयी
राग रंग अनुराग बढ़ा, प्रेमी जन बहक रहे,
आम्र मंजरी बौराई, पक्षी गण चहक रहे।

**प्रीति शर्मा**
रीवा म०प्र०

## ग़ज़ल

आतंकी घुस आये हैं आबादी में।
लगता है अब देर नहीं बर्बादी में।
कैसे होगा पालन अब कानूनों का।
गुंडे डाकू चोर छुपे हैं खादी में।
इक इक कार मिली है हर बाराती को।
कल नेताजी की बिटिया की शादी में।
लूट रहे हैं काले गोरों से ज्यादा।
ये पाया है हमने इस आज़ादी में।
ताज मिला है आज एक बंजारिन को।
क्या रक्खा है महलों की शहज़ादी में।
सारी दौलत न्यायालय में हवन हुई।
अब तो प्राण बचे हैं बस फरियादी में।
आधी रोटी खाकर मुखिया भूखा है।
कमल लोग सब खुश हैं रोटी आधी में।

**कमल सक्सेना**
बरेली

# किस से कहूँ!

आई तो है आजादी , पर मूक सी खड़ी है।
हैरां है और परेशां ,बेचैन भी बड़ी है।
बलिदान बाँकुरों का सब व्यर्थ हो गया है।
सद्भाव शांति शुचिता, का अर्थ खो गया है।1।
नित देश जल रहा है , संग्राम छिड़ रहा है।
हा! बंधु बंधु से ही , अविराम लड़ रहा है।।
माँ सोच में खड़ी है , कैसी विकट घड़ी है।
क्या लोग कर रहें हैं , वह सोच में पड़ी है।2।
यह ढोंग,यह आडम्बर , क्यों लोग कर रहे हैं!
दुष्कर्म के सहारे , सुख भोग कर रहे हैं!
वो रंच भी न जग में , संतोष कर रहे हैं।
नित लूटपाट करके , निज कोष भर रहें हैं।3।
वोटों की राजनीति ही , इनकी जिंदगी है।
निज स्वार्थ की ही पूंजी , इन सबकी बंदगी है।
बिक जाए देश चाहे , पर इनकी चाँदनी हो!
स्वच्छन्दता के संग-संग कंचन, व कामिनी हो।4।
अन्याय और पीड़न किंचित न नाम मेरा।
यह जुल्म और शोषण सिंचित न काम मेरा।
नित स्नेह-प्यार-करुणा , बेघर से हो रहे हैं।
सम्मान और श्रद्धा , छिप-छिप के रो रहे हैं।5।
मुझको यहाँ जो लाये,वो एक भी नहीं है।
किससे कहूँ ! दृगों में उद्वेग की नमी है।
निश्छल-पवित्र थे वे,और थे परोपकारी।
जांबाज थे,विदेशी शासन पर चोट मारी।6।
कैसा समय है आया,कैसी अशुभ घड़ी है।
क्या हो गया है सबको,वह सोच में पड़ी है।
आई तो है आजादी,पर मूक सी खड़ीहै।
हैरां है और परेशां,बेचैन भी बड़ी है।7।

**पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'**
शक्तिफार्म, सितारगंज,
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

# घनाक्षरी

(1)

मातु- पितु -मान करें;
गुरु का सम्मान करें|
उनका आशीष पाके;
आगे बढ़ जाइए!

कर्म में विश्वास करें;
भाग्य की भी आस करें|
आलस  को त्याग कर;
जीवन सजाइए!

जग में महान बने;
देश की भी शान बने|
निज राष्ट्र हित में भी;
जीवन  लगाइए!

पथ का पाथेय बने;
सबके लिए  धेय बने|
हिय में उजाला भर;
तम को मिटाइए! 1!

( 2)

दुख में भी जप करें;
सुख में भी तप करें|
विधि के विधान को;
मनसे अपनाइए!

सोच भी साकार करें;
शुद्ध संस्कार धरे|
अहम को त्याग कर;
श्रेष्ठ बन जाइए!

जग में साधक बनो ;
बढ़े चलो पथिक हे!
अपने प्रयोजन में;
सफल हो जाइए!

भूल से न शूल बने;
खिला हुआ फूल बने|
फैल कर दूर-दूर;
जग महकाइए! 2!

**रामरतन यादव**
खटीमा उधमसिंह नगर उत्तराखंड मोबाइल नंबर 9410191599

## प्रयाण गीत

अदम्य  शक्तिवान हो;
निडर हो धैर्यवान हो|
तुम देश के जवान हो;
रण का बिगुल बजा के तुम;
बढ़े चलो ;बढ़े चलो|
कंटको की राह में;
शत्रुओं की थाह में|
लक्ष्य के ही चाह में;
कदम- कदम मिलाके तुम;
बढ़े चलो ;बढ़े चलो|
शेर की हो गर्जना;
हो दुश्मनों की मर्दना|
सूर्य बनके चमकना;

आस देश की हो तुम;
बढ़े चलो ;बढ़े चलो|
तुम्हीं राष्ट्र भाल हो;
तुम लाल- बाल -पाल हो|
तुम शक्ति में विशाल हो;
वीरता के मार्ग में;
बढ़े चलो ;बढ़े चलो|
तुम वतन की शान हो;
निज राष्ट्र का सम्मान हो|
गांडीव का संधान हो;
नित नवीन शौर्य से;
बढ़े चलो; बढ़े चलो|

**रामरतन यादव**
खटीमा उधम सिंह नगर उत्तराखंड
मोबाइल नंबर 9410191599

माना समय नही
अनुकूल ये तेरे हक में,
सफर के समय की
हर घड़ी ही तो तेरी है,
मोड़ समय की धारा,
अक्ल से तेरी खोज कर,
जीवन पथ की गति पर ये
हर कड़ी तेरी है मौज कर, रोज कर।
किस्मत के हैं जो धनी
मिलता उन्हें उनके हिस्से का,
तू भला उदास क्यों,
तुझे भी मिला अगर संघर्ष तेरे हिस्से का।
जीवन के हर पन्ने पर
हर सुबह लिख आगाज़
हौसलों-उम्मीदों को अपनी फौज कर
जीवन पथ की गति पर ये
हर कड़ी तेरी है मौज कर, रोज कर।
बीतती है गर किसी की शामें
रंगीन सुनहरी यादों में
जिया जो सुख सागर में
याद उसे आएगा वही,
हर सांझ को तू क्यों रोये,
जख्मों को अपने कुरेदकर,
संघर्ष-चोटें-ज़ख्म-जहर-गम
बना कुछ सामान सुकून का
पल पल नित नए कुछ शोध कर,
जीवन पथ की गति पर ये
हर कड़ी तेरी है मौज कर, रोज कर।

**तरुण सिंह मौर्य (आदि)**
जीवन ज्योति विद्या मंदिर, ग्वाल नगर,
छीपानेर रोड, हरदा - 461331
मो. – 8109351110, 9755441609

# प्रस्तर है तो क्या हुआ

हिमालय क्यों नहीं
पिघल सकता.....
प्रस्तर है तो क्या हुआ।

सूरज तपता रहा
फिर भी वो अड़ा रहा।
संवेदनाएं किरचें-किरचें
परत दर परत सरकती रही।

आश्चर्य किसी की नजर न पड़ी
संभावनाओं के सब पुल टूट गए
सदाशयता के दंभ भी लो फूट गए।

फिर एक बीज ही
अपना अस्तित्व क्यों खोए
क्या जिम्मेदारी नहीं उस
भुरभुरी मिट्टी की भी...।

घरोंदों से खेलने के शौक
तो सब पाले बैठे थे ।
बेमौसम फूल सजाने के भी
सपने फिर हुए बेगाने थे।

हवा भी व्यर्थ क्यूं शोक मनाए
पुरजे-पुरजे शोलों को भी
दफन करना आज सिखाए।

क्यों नहीं मान लेते
बसंत सिर्फ सच नहीं होता
पतझड़ के भी अपने रंग होते हैं।

हीरक ज़मीं में धंसे और
पारस भूमि में फंसे विकट
संकटों के धरतीपुत्र होते हैं।

इसी आस में फिर आकाश में
अदना से मोती ने देखा
दृग सुलगाए ..
विस्तारित नेत्र
विस्थापित क्षेत्र।

वर्षा अब मौन है
बूंद- बूंद का महा नर्तन है
महाविनाश के घोर बादल को
अब मनु का अटल दर्शन है।

**रेखा शर्मा**
अजमेर राजस्थान

फागुन तेरे आ जाने पर ना जाने क्या बात हुई ,
खुशियों से दिल झूम उठा जब रंगों की बरसात हुई ,,

खट्टी-मीठी नोक-झोंक में दिन बीते तैयारी में ,
हल्ला-गुल्ला हंसी-ठिठोली सारी सारी रात हुई ,,

जीजा-साली देवर-भाभी के मंसूबे पक्के थे ,
दांव किसी का ,जीत किसी की और किसी की मात हुई ,,

मिल जाए दिल होली पर तो मन में फाँस नहीं रखना ,
मुंह देखे के गले मिलोगे यह भी कोई बात हुई ,,

बरसों बिछड़ा यार मिला है मुझको अब के होली पे ,
इससे बढ़कर तो होली की नहीं कोई सौगात हुई ,,

अजब रंग है अजब ढंग हैं होली के दस्तूर अजब ,
एक गधे पर गधा बिठाकर चौपाई बारात हुई ,,

अपने अपने ढंग से होली सभी मनाते आए 'मनु' ,
तन से या मन से हो रंगी ये रंगीं कायनात हुई ,,

मनोज 'मनु'
6397093523

## ग़ज़ल

यूँ तो हर साँस से लिपटा है वो ख़ुशबू की तरह
फिर भी बेचैन है दिल दश्त में आहू की तरह

बन के सैलाब बहा ले गया दिल की बस्ती
फिर भी आँखों में रहा ज़ज्ब वो आँसू की तरह

दिल की कुटिया से जो ख़ुशबू का धुआँ उठता है
कौन है धूनी रमाये हुए साधू की तरह

तेरी यादें तेरे होने का पता देती हैं
सरका तकिया हो जैसे तेरे बाज़ू की तरह

उसका सोचा है फक़त मीना, तो महसूस हुआ
दिल की रफ़्तार हुई जाती है आहू की तरह

**मीना नक़वी**

## होली गीत

होली ने तन-मन पर डाले, जाने कितने रंग
उल्लासित सांसो में जागी, जैसे नई उमंग
बिखरे रंग, गुलाल, तरंग.

फागुन ऋतु बौराई सी, धूप में हैं कुछ तरुणाई सी
रूपवती है सारी धरती, साँझ लगे है अलसाई सी
सप्त सुरों में चहुँ दिशायें, पवन में है मृदंग
बिखरे रंग, गुलाल, तरंग

मदमदाता त्यौहार है होली, जिसकी है पहचान ठिठोली
कागा की आवाज़ भी लगती, कोयल जैसी मीठी बोली
नीरवता गुमनाम हुई है, सुखकर है हुडदंग
बिखरे रंग, गुलाल, तरंग

**मीना नक़वी**

ज्यादा जीने की चाहत में जीना ही दुश्वार हुआ।
कागज़ की कश्ती सा जीवन हमको इससे प्यार हुआ।

कुछ खोया कल की यादों में कुछ कल की उम्मीदों में
दो पाटों के बीच में फँस कर कितना आज ख्वार हुआ।

दोस्त हुआ करता था मेरा, रोज का आना जाना था
मजबूरी ही होगी उसकी दुश्मन सा व्यवहार हुआ।

एक अरसे के बाद अचानक जब नज़रों से गुजरा वो
ईद हुई दिवाली आई, होली का त्यौहार हुआ।

दिल को एक किनारे रख कर मिलिए जुलिए लोगों से
फन जिसने भी सीख लिया यह उसका बेड़ा पार हुआ।

**डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता**

## जै वीणावादिनी (कुमांउनी दोहे)

हाथ जोड़ी विनय करूँ, धरिये माता लाज।
मिटै दिये अन्यार कैं, द्वार ऐ रयूँ आज।।

जब जब वीणा बाजछो, फैल जांछ तब ज्ञान।
उज्याव दुणि में फैलछौ, मिट जांछ सब अज्ञान।।

नाम जपनि माँ शारदे, वाणि में छौ निवास।
साँच मन लै जैल भजो, पुर हूँछौ सब आश।।

जय हे वीणापाणि माँ, तीकैं भंजू संसार।
भरिं दिये माता सदा, आब ज्ञान भंडार।।

सदा हाथ वीणा सजीं, बाजी जब झंकार।
ज्ञान उनूं कैं मिल जछौ, जो आयीं दरबार।।

ज्ञान देवी त्यौर करूँ, सदा सदा जयकार।
भल बाट लें दिखैं दिये, भरिये ज्ञान भकार।।

विद्या देवी भजुं तिकैं, हंस सवारी नाम।
माता चरणों में त्यौर, दुणिं कौ ज्ञान धाम।।

रोग दोष दूर करिये, दुणि है जो खुशहाल।
भौल बुलाणक मति एजो, कटि जो सब जंजाल।।

हर घर ज्ञानक दिप जलो, मिटी जो सब अन्यार।
भलि मति ह्यमूंकै दिये, सुण छै सदा पुकार।।

विद्या धन ठुल हूँ दुणि में, भरि ल्यो यैं भंडार।
माँ त्यौर शरण ऐ रयूँ, करि दै वेणा पार।।

**भुवन बिष्ट**
मौना, रानीखेत, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

# होली (गीत)

बरस रहा है पिचकारी से लाल गुलाबी रंग ।
रंग बिरंगी बौछारों से पुलक उठा हर अंग ।।

होली होली हुरियारों का गूँज रहा है शोर
गली गली में नाच रहा है मादक मन का मोर
थिरक उठीं ढोलक की थापें बाज रही है चंग ।
चौबारे में मचा हुआ है होली का हुड़दंग।।
बरस रहा है---

रंग दिये हैं बनवारी ने राधा जी के गाल
खिले हुए हैं इक दूजे में केसर और गुलाल
दृश्य मनोहर देख देखकर मन में उठे उबाल
छलकी है आँखों में मस्ती ज्यों पीली हो भंग।
रोम रोम में जाग उठा है सोया हुआ अनंग।।
बरस रहा है------

कभी सताया जी भर तुमने कभी किया मनुहार
छेड़छाड़ में मेरे साजन टूटा मुक्ताहार
मचल उठा है फिर नयनों में वह सोलह श्रृंगार
तुम्हीं बताओ अब मैं आखिर खेलूँ किसके संग।
रंग देखकर उठ आयी है मन में नयी उमंग ।।
बरस रहा है------

एक चाँद सा मुखड़ा चमका फिर नयनो के पास
जिसे देखकर भर आया है मन में नव उल्हास
मन को जाने क्यों है उस पर आज पूर्ण विश्वास
चलता रहता है मन -भीतर उसका सुखद प्रसंग।
मीठे सपनों में उड़ती हूँ जैसे उड़े पतंग।।
बरस रहा है-----

कितने फागुन बीत गये यूँ रोती हूँ दिन रैन
दरवाज़े पर टिके हुए हैं कबसे व्याकुल नैन
विरह अग्नि में झुलस गया है अंतस का सुख-चैन
साग़र जीने को अपनाऊँ कहो कौन सा ढंग ।
बिना तुम्हारे घर-आँगन का हाल हुआ बदरंग ।।
बरस रहा है-----
रंग बिरंगी बौछारें-------

**विनय साग़र जायसवाल**
बरेली

## ग़ज़ल

जिनको सुलझाना है उलझनों के लिए
चल पड़े काफ़िले मंज़िलों के लिए
आप पर है ख़ुदा का करम ही करम
कुछ दुआ कीजिए ग़मज़दों के लिए
अपने हक़ में ही लड़ते रहे आप बस
काश लड़ते कभी मुफ़लिसों के लिए
धूप बारिश में इनका बुरा हाल है
दे दे मालिक तू घर बेघरों के लिए
जो बुरे वक़्त पर काम आये नहीं
क्या कहूँ ऐसे मैं दोस्तों के लिए
साक़िया जामो-साग़र छलकते रहें
और क्या चाहिये मैकशों के लिए
नक़्शे-पा मिल गये तेरे साग़र हमें
जो बताते रहे रास्तों के लिए

**विनय साग़र जायसवाल**
बरेली

## कोई अपना नहीं जमाने में...

कोई अपना नहीं जमाने में
फक़त आँसू मेरे खजाने में

बेतरतीब-सी पड़ीं कुछ यादें
वक्त लगेगा उन्हें जमाने में

इज्जत जाते देर नहीं लगती
लग जातीं मुद्दतें कमाने में

नाजुक काँच से होते रिश्ते
दरक जाते हैं आजमाने में

भुला बैठे हम ख्वाब ही अपने
नून तेल लकड़ी जुटाने में

कैसे अपने वे जिनको हरपल
मजा आता है दिल दुखाने में

करना-धरना कुछ नहीं होता
माहिर होते गाल बजाने में

कितना गिराया खुद को हमने
नाज़-नखरे उनके उठाने में

मुश्किल वक्त में पास न आए
फिर फर्क क्या अपने विराने में

रख जाता काश कोई हमारे
सुकून थोड़ा सा सिरहाने में

जग में जिसके साथ न कोई
शामिल हो वो मिरे घराने में

करनी न कोई छोड़ी किसी ने
वजूद को हमारे मिटाने में

कभी तो सुख भी अपने होंगे
हमने दिए हैं अश्क बयाने में

हमारे दिल के निकट थे 'सीमा'
जुटे पड़े जो हमें हराने में

**डॉ.सीमा अग्रवाल**
जिगर कॉलोनी, मुरादाबाद(उ.प्र.)
मोबाइल नं. 9897623136

## मुस्काना

कलियों की तरह खिलना सीखो, फूलों सा मुस्काना।
हिम्मत से काम करो सारे, मुश्किल से ना घबराना।।

जब शब्दों की कीमत ना हो, बेहतर है चुप रहना।
बिन बोले सुख-दुख को सहना, निर्मल जल बन बहना।।
बीती बातें, बीती यादें, बीते-बीते किस्से।
उम्मीदों की किरणें जागें, यदि जुड़ जाएँ हिस्से।।

पाकर खोना, खोकर पाना, दिल को बस बहलाना।
हिम्मत से काम करो सारे, मुश्किल से न घबराना।।

करने को काम बहुत से हैं, मंजिल के दूर कदम हैं।
हिय ढूंढ रहा है हरियाली, ये आँखें भी नम -नम हैं।।
विपरीत हवाएं चलती हैं, चलने वालों को मत रोको।
रुकना थमना जीवन ही नहीं, बे बात किसी को मत टोको।।

बिन मौसम के जब हो बारिश, तन-मन को हर्षाना।
हिम्मत से काम करो सारे, मुश्किल से न घबराना।।

**छाया सक्सेना 'प्रभु'**
म. नं. 12, माँ नर्मदे नगर,
बिलहरि, जबलपुर (मध्य प्रदेश)
मोबाइल: 7024285788

# काश

धड़कता है दिल मेरे सीने में भी,
कोई मुझे भी इंसान समझ ले।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

वेदना मेरी भी कुछ कम ना है,
आंसू मेरे हैं गंगा से निश्छल।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

खोया है मैने भी अपना ही,
सूनी हुई है मेरी भी जिंदगी।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

अब निभाती हूँ दो दो किरदार,
फिर भी मुश्किल सबको खुश रखना।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

जो नहीं निकलती थी बाज़ार में कभी,
आज थैला उठा कर फिरती है हर कही।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

सबकी खातिर खुद को हर दिन खोती हूँ,
जिंदगी ने फिर भी कुछ न दिया मुझे।
काश कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

काश! काश! काश!
कोई मेरे दिल की यह,
अनकही बात समझ ले।

**नयना कक्कड़ कपूर**
रामपुर, उत्तर प्रदेश

## होली

मचो फाग घनघोर फाग घनघोर,
देखो होरी झूमे रे,
चलत रंग चहु ओर रंग चहु ओर,
देखो होरी झूमे रे,
गलियन गलियन धूम मची है,
आयो नंद को छोर,
देखो होरी झूमे रे,
राधा को वो रंग लगावे,
चुनर रंगे हर छोर
देखो होरी झूमे रे,
टोली लेके साथ चलत है,
है जी माखन चोर,
देखो होरी झूमे रे,
लाल लाल है अम्बर होए,
चहो दिशा की ओर,
देखो होरी झूमे रे,
भर पिचकारी गोपियन मारी,
भागे वो चहू ओर,
देखो होरी झूमे रे,
चलत रंग चहु ओर रंग चहु ओर
देखो होरी झूमे रे।।।

**नयना कक्कड़ कपूर**
रामपुर, उत्तर प्रदेश

## जीवन एक रंगोली

ये जीवन है एक रंगोली, अनेक रंग हैं सजे यहाँ,
गर एक रंग हैं हम तो, एक रंग हैं आप वहाँ.

सब रहें मिलजुल कर तो, फ़बतें हैं बहुत ख़ूब,
हर रंग है ज़रूरी, बनती न एक रंग से रंगोली.
ये जीवन है एक रंगोली, अनेक रंग हैं सजे यहाँ,
गर एक रंग हैं हम तो, एक रंग हैं आप वहाँ.

नए नय रंगों का प्रवेश हो, मिल जुल कर सब रहें,
रंगोली ऐसे ही सजी रहे, जीवन ऐसे ही रंगीन रहे.
ये जीवन है एक रंगोली, अनेक रंग हैं सजे यहाँ,
गर एक रंग हैं हम तो, एक रंग हैं आप वहाँ.

होली हो हर दिन, रंग नए नए बिखरते रहें.
पकवानों की सुगंध फैले, खुशियाँ ऐसे ही मनती रहें.
ये जीवन है एक रंगोली, अनेक रंग हैं सजे यहाँ,
गर एक रंग हैं हम तो, एक रंग हैं आप वहाँ.

**शोभित**
रामपुर, उत्तर प्रदेश

बहुत हुआ अब जाग उठो
मत सोचो और विचार करो
इन पाकिस्तानी कुत्तों पर
तुम जमकर वीरों वार करों

माफ इन्हें कर बार-बार
निभाया भाई-चारा है
लेकिन अब गोली भरने का
अंतिम संकल्प हमारा है

हमारे देश का दाना खाकर
हमको ही आँख दिखाई है
लेकिन ये नीच कार्य कर
इन्होने फिर नीचता दिखाई है

क्यों डरते हो तुम पाकिस्तानी
सामने वार करने से
हिम्मत है तो करो सामना
डरते हो तो रहने दो

माओं से हो गए लाल दूर
पत्नियों का उजड़ गया सिन्दूर
भाई-बहन के संग संग ही
बच्चों से हो गए पिता दूर

समस्त भारतवासियों का
बस एक यही अब नारा है
छलनी कर दो उन लोगों को
जिन्होंने भारत माँ को ललकारा है

**राघव सागर**

## एक चतुष्पदी

हरियाले कलरव से गुंजित,
प्यारा सा संसार मिला।
घोर अकेलेपन से लड़ कर,
जीने का आधार मिला।

बरसों से सूनी बगिया में,
ज्यों ही पौध लगाई तो।
मैंने पाया मुझको मेरा,
बिछुड़ा घर-परिवार मिला।

**राजीव 'प्रखर'**
मुरादाबाद

## संदेशा (मुक्तक)

तेरे आने का संदेशा,
जब से मुझ तक आया है।
आँधी-तूफां-सर्दी-गर्मी,
हर मौसम ही भाया है।

अन्तर्मन में कलरव करते,
भाव-सिन्धु के आंचल से।
शब्द सरीखे मोती चुन कर,
मैंने गीत बनाया है।

**राजीव 'प्रखर'**
मुरादाबाद

## ग़ज़ल

मंजिलें जिनकी जुदा हों प्यार का इक़रार कैसा
छोड़ जाते राह में जो उनसे करना प्यार कैसा।

साथ जब तक है सफ़र बस प्यार तब तक ही करेंगे
अजनबी बन जाएंगे फिर दोस्त कैसा यार कैसा।

तुम सफ़र आगे का काटोगे अकेले सोच लेना
फिर पता चल जाएगा के प्यार का संसार कैसा।

बेवफ़ाई जब मिलेगी सुन्न हो जायेगा तन मन
जान पाओगे नहीं तुम फूल कैसा खार कैसा।

तुम बनाकर अक्स दीवारों पे जब देखा करोगे
हाल पूछेंगे सभी फिर.. प्यार का बीमार कैसा।

**अखिलेश वर्मा**
मुरादाबाद

## भारत वर्ष महान

भारत वर्ष महान,हमारा भारत वर्ष महान।

वन सुरम्य हरियाली,कितना रूप सलोना है,
शस्य श्यामला भारत माँ का,कण-कण सोना है।
गंध लुटाती हैं कश्मीरी, केसर की क्यारीं,
रहें सतर्क न अपना गौरव,हमको खोना है।
मातृभूमि का बंधु चलो! कर लें मिलकर जयगान,
भारत वर्ष महान,हमारा भारत वर्ष महान।

यहाँ आपदा से लोगों को,लड़ना आता है,
वचन निभाने की खातिर,खुद मरना आता है।
कोमल धागा लौह सलाखों,से ज्यादा भारी,
भइया राखी के बंधन को,तोड़ न पाता है।
पण्डित,सिख,ईसाई हों,अथवा हों शेख-पठान,
भारत वर्ष महान,हमारा भारत वर्ष महान।

जब आपस में लड़े,ग़ैर की तब बन आई थी,
गद्दारों ने अपनी माँ, परतन्त्र कराई थी।
बोस,भगत,आज़ाद,न जाने कितने वीरों ने,
निज आहुति दे भारत माँ को,मुक्ति दिलाई थी।
देशवासियो! करो देश पर,अर्पित अपने प्रान,
भारत वर्ष महान,हमारा भारत वर्ष महान।

**डॉ महेश मधुकर**

(मुखड़ा)
हमें उसने, रुलाया है ।
हमारा दिल, दुखाया है ।
(अन्तरा १)
हमें तो प्यार था उससे।
उसे माँगा गया रब से
बुने सपने, सुहाने थे।
हमी उसके, दिवाने थे।
किया उसने, पराया है।
हमारा दिल,दुखाया है। (टेक)
(अन्तरा २)
नहीं भाती,हमें बर्षा।
रही ये और, भी तरसा।
सजन से मिल नहीं पायी।
पिया की याद है आयी।
बहुत उसने, सताया है।
हमारा दिल, दुखाया है। (टेक)
(अन्तरा ३)
लगे है रात,नागिन सी।
नहीं हूँ मैं, सुहागन री!
अकेली जी नहीं पाऊँ।
गमों में डूब मर जाऊँ।
स्वप्न कैसा, सजाया है?
हमारा दिल, दुखाया है। (टेक)
(अन्तरा ४)
सनम! इक बार बस मिल ले।
हमीं को साथ में चुन ले।
यही हसरत, अभी जिन्दा।
यही चाहत, अभी जिन्दा।
बलम आँखों बसाया है।
हमारा दिल दुखाया है। (टेक)

**रागिनी गर्ग**
पुराना गंज, रामपुर

बदले हुए रिश्तों की
कुछ ऐसी कहानी है
इक आँख तो सूखी है
दूजी भरी पानी है ।।
यूँ बदला  नजरिया है
अपना वेगाना  है
यही हाल रहा सबका
समझ !खत्म जमाना है
एक माँ के  सब बच्चे
आपस में झगड़ते हैं,
जाने कितने ही घाव
हिय मात के करते हैं
नफरत  दिल में है भरी
अधर सी कर रहते हैं
इस तरह के जीवन को
जीवन नहीं  कहते हैं ।

मासूम तो है मुखड़ा
रगों में शैतानी है।
किंतु लगती क्यों फिर भी
वही दुनिया  जानी है
हुई जर्रे जर्रे से
पहचान तो मानी है।
बदले हुए रिश्तों की
यह  कैसी कहानी है
इक आँख तो सूखी है
दूजी भरी पानी है।

**रागिनी गर्ग**
पुराना गंज, रामपुर

जब नाम लिखा तुमने अपना अहसास के सूखे पत्तों पर
फाल्गुन ने अमृत बरसाया मधुमास के सूखे पत्तों पर

तेरे आने की आहट से कोमल किसलय जयघोष हुआ
नव आस खिली, टूटे- निर्जन विश्वास के सूखे पत्तों पर

तेरी श्वासों से श्वासित हो हर श्वास सुगंधित है ऐसे
मकरंद मिलाया हो जैसे मम श्वास के सूखे पत्तों पर

आलिंगन ये पाकर तेरा, मन का आँगन यों झूम उठा
ज्यों रास रचाया हो तुमने वनवास के सूखे पत्तों पर,

अब साथ तेरे इस जीवन का दुःख भी उत्सव हो जाता है
"मासूम" सुखद आभास मिले संत्रास के सूखे पत्तों पर

मोनिका "मासूम"

# अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र

जितेन्द्र कमल आनंद | पुष्पा जोशी प्राकाम्य | राम किशोर वर्मा | डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता | रागिनी गर्ग

डॉ महेश मधुकर | छाया सक्सेना प्रभु | राजीव प्रखर | शोभित | नयना कक्कड़ कपूर

मीनाक्षी ठाकुर | राकेश कुमार मिश्रा | राजेश्वरी जोशी आद्रा | कृष्ण लता "कृष्णा" | रवि प्रकाश

सुबोध शर्मा शेरकोटी | डॉ रीता सिंह | डॉ मीना कौशल | प्रीति शर्मा | कमल सक्सेना

राम रतन यादव | रेखा शर्मा | मनोज वर्मा मनु | मीना नक़वी | डॉ शालिनी शर्मा मुक्ता

भुवन बिष्ट | विनय सागर जायसवाल | डॉ सीमा अग्रवाल | डॉ बी के चन्द्रसखी | ओंकार सिंह विवेक

राघव सागर | अखिलेश वर्मा | मोनिका मासूम

स्थापित : गंगा जयंती 1994
आध्यात्मिक साहित्यिक
काव्यधारा, रामपुर (उ.प्र.)
के तत्त्वावधान में
कवि सम्मेलन, सम्मान-समारोह
: आमंत्रित काव्यकार :
दिनांक : 30 सितम्बर 2018, समय : दोपहर 12 बजे, स्थान :
आयोजक :
मो. 7017711018

काव्यधारा की ओर से
होली की हार्दिक
शुभकामनायें
बधाई

काव्यधारा:
होली की हार्दिक
शुभकामनायें

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास, साईं विहार कॉलोनी, रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018